Baglamukhi Kavach in Hindi

बगलामुखी कवच

Sumit Girdharwal Ji

9540674788, 9410030994

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.info

www.yogeshwaranand.org

मां बगलामुखी के प्रत्येक साधक को प्रतिदिन जाप प्रारम्भ करने से पहले इस कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए। यदि हो सके तो सुबह दोपहर शाम तीनों समय इसका पाठ करें। यह कवच विश्वसारोद्धार तन्त्र से लिया गया है। पार्वती जी के द्वारा भगवान शिव से पूछे जाने पर भगवती बगला के कवच के

विषय में प्रभु वर्णन करते हैं कि देवी बगला शत्रुओं के कुल के लिये जंगल में लगी अग्नि के समान हैं। वे साम्रज्य देने वाली और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं। भगवती बगलामुखी के इस कवच के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। इस कवच के पाठ से अपुत्र को धीर, वीर और शतायुष पुत्र की प्राप्ति होति है और निर्धन को धन प्राप्त होता है। महानिशा में इस कवच का पाठ करने से सात दिन में ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। तीन रातों को पाठ करने से ही वशीकरण सिद्ध हो जाता है। मक्खन को इस कवच से अभिमन्त्रित करके यदि बन्धया स्त्री को खिलाया जाये, तो वह पुत्रवती हो जाती है। इसके पाठ व नित्य पूजन से मनुष्य बृहस्पति के समान हो जाता है, नारी समूह में साधक कामदेव के समान व शत्रओं के लिये यम के समान हो जाता है। मां बगला के प्रसाद से उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है । उसके गले से कविता लहरी का प्रवाह होने लगता है। इस कवच का पुरश्चरण एक सौ ग्यारह पाठ करने से होता है, बिना पुरश्चरण के इसका उतना फल प्राप्त नहीं होता। इस कवच को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पुरुष को दाहिने हाथ में व स्त्री को बायें हाथ में धारण करना चाहिये।

ध्यान

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीताशुकोल्लासिनीम् ।
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।।
हस्तैर्मुदगर पाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः।
व्याप्तागीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोभिलाषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः ।

ऋषि-न्यास

शिरसि भैरव ऋषये नमः ।

मुखे विराट छन्दसे नमः ।

हृदि बगलामुखीदेवतायै नमः ।

गुह्ये क्लीं बीजाय नमः ।

पादयो ऐं शक्तये नमः ।

सर्वांगे श्रीं कीलकाय नमः ।

करन्यास

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ।

ॐ ह्रैं कवचाय हुम ।

ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय मामैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

कवच

शिरो मे पातु ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ।।1।।
श्रुतौ मम् रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।।2।।
देहि द्वन्द्वं सदा जिहवां पातु शीघ्रं वचो मम ।
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ।।3।।
कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।
मायायुक्ता यथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ।।4।।
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।।5।।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्वसन्धिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ।।6।।
ॐ ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु ।
मुखिवर्णद्वयं पातु लिगं मे मुष्कयुग्मकम् ।।7।।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी ।।8।।
जंघायुग्मे सदापातु बगला रिपुमोहिनी ।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रय मम ।।9।।
जिहवावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ।।10।।
विनाशयपदं पातु पादांगुल्योनखानि मे ।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रियवचांसि मे ।।11।।
सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ।।12।।
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।।13।।
वाराही च उत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ।।14।।
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ।।15।।
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ।।16।।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।

फलश्रुति

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ।।17।।
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदाम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ।।18।।
निर्धनो धनमाप्नोति कवचास्यास्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्री बगलामुखीम् ।।19।।
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः ।
यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले ।।20।।
तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि ।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रो शक्तिसमन्वितः ।।21।।
कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्रं सहस्त्रं कवचं पठेत् ।।22।।
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ।।23।।
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम् ।
एकविंशददिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम् ।।24।।
जपत्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा।।25।।
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ।।26।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि ।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ।।27।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया ।।28।।
भूमौ शत्रोः स्वरुपं च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम् ।।29।।
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेंऽहनि न संशयः ।।30।।
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् ।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।।31।।
संग्रामे जयमप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ।।32।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ।।33।।
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः ।
कवितालहरी तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत् ।।34।।
गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवी प्रसादतः ।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ।।35।।
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।।36।।
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।।37।।
शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते ।
दाराढयो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां ।।38।।
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै ।।39।।
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ते दासोऽस्ति तेषां नृपः ।

इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
बगलामुखी कवचम्
सम्पूर्णम्

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप, अपने आप को योग्य गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरूदेव स्वयं आपको सही राह दिखायेगें।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है - sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

Our Books

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**
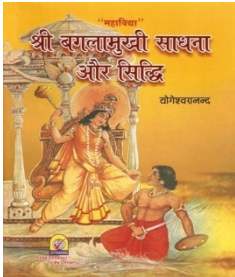
Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

2. **Mantra Sadhana**
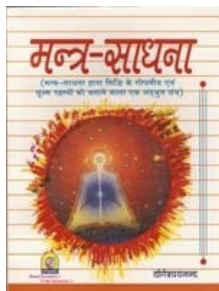
3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)
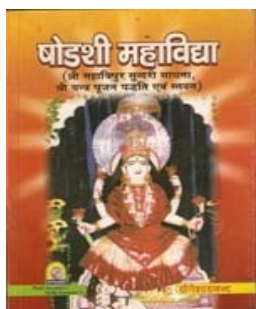
4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org